International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 321-327 www.ijhssm.org

''आचार्य चाणक्य की शिक्षा नीति की सम–सामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रांसगिकता''

डॉ॰ रेवत सिंह
शोध निर्देशक, श्री अग्रसेन स्नात्तकोतर शिक्षा महाविद्यालय,
केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर।

अनिल कुमार
शोधार्थी,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

Date of Submission: 03-03-2024 Date of Acceptance: 13-03-2024

➢ **सारांश :–**

आचार्य चाणक्य एक महान राजनीतिज्ञ और कूटनीतिज्ञ होने के साथ–साथ एक महान दार्शनिक और शिक्षक भी थे। आचार्य चाणक्य के चिंतन का केन्द्र बिन्दू समग्र राष्ट्र था, जिसके प्रत्येक व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना उनका लक्ष्य था, फिर चाहे वह किसी भी वर्ण और लिंग का क्यों ना हो। आचार्य चाणक्य व्यक्ति और राष्ट्र दोनों की मुक्ति और विकास के प्रबल समर्थक थे और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु वे शिक्षा को आवश्यक मानते थे। इसलिए उन्होनें शिक्षा व्यवस्था और उसकी उपयोगिता पर समग्र रूप से अपने विचार व्यक्त किये है। आचार्य चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र ग्रंथ और चाणक्य नीति में शिक्षा के विभिन्न अंगो यथा – शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा प्रणाली, शिक्षा का उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि और शिक्षक–शिक्षार्थी संबंधो और गुणों पर व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, जो आज भी न केवल भारतवर्ष अपितु समग्र विश्व के लिए अनुकरणीय है। आचार्य चाणक्य द्वारा प्रस्तुत शिक्षा नीति को वर्तमान समय में पूर्ण रूप से लागु करना संभव नही है। क्यों कि तत्कालीन परिस्थितियों और वर्तमान आवश्यकताओं में गहरा अंतर है। फिर भी आचार्य चाणक्य द्वारा बताई गयी बहुत सी नीतियाँ आज भी प्रांसगिक है, जो वर्तमान समाज की समस्याओं का मार्गदर्शन करने के लिए हमारे लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इसलिए हम वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आचार्य चाणक्य की शिक्षा नीति को परिमार्जित और परिशोधित कर उन्हें लागु कर सकते है।

➢ **शोध का उद्देश्य :–** प्रस्तुत शोध का उद्देश्य आचार्य चाणक्य की शैक्षिक नीतियों की खोज करना और वर्तमान समय में उनकी प्रांसगिकता की जाँच करना है।

➢ **तकनीकी शब्दावली :–** आचार्य, शिक्षा, नीति, सम–सामयिक, परिप्रेक्ष्य, प्रांसगिकता।

➢ **शोध विधि :–** शोधकर्ता ने संबधित शोध हेतु दार्शनिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।

➢ **प्रस्तावना :–**

आचार्य चाणक्य भारतीय इतिहास के युग पुरूष, असम्भव को सम्भव कर दिखाने वाले ऐसे शस्त्रविहीन योद्वा जिन्होनें अपनी नीतियों के बल पर ही भारत के इतिहास को एक सुनहरा मोड़ दिया। विश्व भर के शिक्षकों तथा राजनीतिज्ञों के लिए आचार्य चाणक्य का व्यक्तित्व आज भी अनुकरणीय एवं आदर्श है। उनके चरित्र के पीछे उनकी महानता, कर्मनिष्ठा और दृढप्रतिज्ञा तथा साहस नजर आता है। आचार्य चाणक्य कूटनीतिज्ञ होने के साथ–साथ एक सफल शिक्षक, दार्शनिक, महान रचनाकार और जीवन–दर्शन के भी मर्मज्ञ थे। उन्होनें अपने जीवन से प्राप्त अनुभवों का संकलन किया था जिसे संसार 'चाणक्य नीति' के नाम से जानता है। उन्होनें चन्द्रगुप्त को अपने शैक्षिक निर्देशन में साधारण से असाधारण बना दिया और सत्ता के शीर्ष सिंहासन तक पहुँचा दिया। आचार्य चाणक्य ने अपने नीति शास्त्र 'चाणक्य नीति' में विद्यार्थियों के लिए अपना नीजी उच्च और अनुभूत शैक्षिक दर्शन व्यक्त किया है। उनके शैक्षिक दर्शन को जीवन में उतारकर एक साधारण विद्यार्थी भी असाधारण उन्नति के मार्ग पर आगे बढ सकता है। आचार्य चाणक्य तक्षशिला वि.वि. के प्रतिष्ठित आचार्य थे। एक शिक्षक होने के नाते उन्होनें अपनी शिक्षा संबन्धी अवधारणा समय–समय पर व्यक्त की। अतः उनकी शिक्षा संबन्धी अवधारणाओं पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विचार करना आवश्यक हैं।

➢ **जीवन परिचय :–**

एक असाधारण विद्वान, महान कूटनीतिज्ञ, एक महान वंश के संस्थापक और एक निस्पृही ब्राह्मण के रूप में आचार्य चाणक्य का बहुआयामी व्यक्तित्व आज भी भारतीय जनमानस के लिए आदर्श है। इस महान शिक्षा

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 321-327 www.ijhssm.org

शास्त्री एवं राजनीति विशारद ब्राह्मण ने स्वेच्छाचारी सम्राटों द्वारा शासित भारत वर्ष में जिस अपूर्व चतुरता से एक शान्तिपूर्ण और समृद्विशाली साम्राज्य की प्रतिष्ठा की थी तथा साम्राज्य की आन्तरिक सुरक्षा के लिए जिन कायदे–कानूनों का निर्माण किया था वे विधान आधुनिक संसार के सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञों के विचारों के साथ मिलाकर तुलनीय है। उनके द्वारा प्रदत शिक्षा, उनके अमूल्य श्लोक आज भी "चाणक्य–नीति" के नाम से भारत में आदर–पूर्वक पढे जाते है। आचार्य चाणक्य के नाम, जन्मतिथि और जन्म स्थान तीनों ही विवाद के विषय रहे हैं। कौटिल्य नाम के सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतभेद है। कौटिल्य अर्थशास्त्र के प्रथम अनुवादक पं. शामशास्त्री नें कौटिल्य नाम का प्रयोग किया हैं। कौटिल्य नाम की प्रमाणिकता को सिद्व करने क लिए पं. शामशास्त्री नें विष्णुपुराण का हवाला दिया है। जिसमें कहा गया है कि **–तान्नदान् कौटल्यो ब्राह्मणस्समुद्धरिष्यति।** कौटिल्य के ओर भी कई नामों का उल्लेख मिलता है, जिनमें एक चाणक्य नाम प्रसिद्व हैं कौटिल्य को चाणक्य नाम से पुकारने वाले कई विद्वानों का मत है कि चणक का पुत्र होने के कारण वे चाणक्य कहलायें। तथा कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि उनका जन्म पंजाब के चणक क्षेत्र के निषाद बस्ती में हुआ था इसलिए उन्हें चाणक्य कहा गया। चाणक्य का मूल नाम विष्णुगुप्त शर्मा था। इन नामों के अतिरिक्त चाणक्य के ओर भी कई नामों का उल्लेख मिलता है। किन्तु पाश्चात्य एवं भारतीय विचारकों में 'अर्थशास्त्र' के लेखक के रूप मे यें कौटिल्य या चाणक्य के नाम से ही विख्यात हैं।

आचार्य चाणक्य का जन्म 375 ई.पू. को तक्षशिला (वर्तमान पाकिस्तान) में, एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम चणक और माता का नाम चन्नेश्वरी था। चाणक्य की प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता के गुरूकुल में पूर्ण हुई तथा उच्च शिक्षा उन्होनें तक्षशिला वि.वि. से प्राप्त की और अपनी प्रतिभा के बल पर वे वही पर आचार्य के पद पर प्रतिष्ठित हो गयें। आचार्य चाणक्य सम्राट चन्द्रगुप्त के तक्षशिला वि. वि. के गुरू थे। तत्कालीन वैदेशिक विपत्ति ने इन दोनों संवेदनशील देशप्रेमी वीरों के हृदय में राष्ट्र रक्षा का प्रश्न उत्पन्न किया और उन्हें सिकंदर के आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए प्रस्तुत कर दिया था। आचार्य चाणक्य समय–समय पर साम्राज्य निर्माणरत चन्द्रगुप्त को आदर्श राजचरित्र के जो पाठ सिखाया करते थे उन पाठों को उन्होनें उसके तथा भारत के भावी राजाओं के स्वाध्याय के लिए ''कौटिल्य अर्थशास्त्र'' के नाम से छः सहस्त्र श्लोकों के ग्रन्थ में लिपिबद्व कर दिया। इसके अतिरिक्त आचार्य चाणक्य ने चाणक्य नीति, चाणक्य सूत्र, लघु चाणक्य और वृहद चाणक्य नामक ग्रंथो की रचना भी की। अपनी तीव्र बुद्धि और कूटनीति के बल पर चाणक्य ने पहली बार भारत में राजनीतिक एकता स्थापित कर अखंड भारत का निर्माण किया तथा सर्वप्रथम पररराष्ट्र संबधों की विवेचना प्रस्तुत की। 283 ई. पू. आचार्य चाणक्य ब्रह्मलीन हो गये।

➢ आचार्य चाणक्य का शिक्षा दर्शन :–

आचार्य चाणक्य एक वेदान्तवादी, राष्ट्रवादी होने के साथ–साथ एक महान शिक्षाशास्त्री और दार्शनिक भी थे। अध्यात्म और दर्शन के क्षेत्र में उनको अभूतपूर्व ज्ञान और अनुभव प्राप्त था। आचार्य चाणक्य के अनुसार मनुष्य को सर्वोच्च बल, विचार शक्ति से प्राप्त होता है। मनुष्य के भीतर जितना अधिक सूक्ष्मतम तत्व होता है, उतना ही अधिक वह शक्ति संपन्न होता है। विचार शक्ति की चरम अवस्था ही ज्ञान है। हमारे अंदर ज्ञान स्वयमेव विद्यमान है, शास्त्र केवल इसको अभिव्यक्त करने का उपाय बताते है। हमारे अंदर ज्ञान की अंतर्ज्योति का प्रकाश है इसलिए कर्म तो केवल विद्या या ज्ञान का सहायक मात्र है, क्यों कि उसके द्वारा चित्त की शुद्धि होती है। सत्व के द्वारा ज्ञान लाभ होता है। पूण्य या शुभ कर्म के द्वारा अज्ञान का आवरण हटता है और ज्ञान की प्राप्ति होती है। आचार्य चाणक्य के अनुसार ज्ञान की अन्तिम अवस्था आत्मप्रज्ञा है, जो योगियों को ही प्राप्त होती है। मनुष्य को ज्ञान की अन्तिम अवस्था में शक्ति व आनन्द की प्राप्ति होती है। चाणक्य ने ज्ञान के विषय में और अधिक विशद् विवेचना की है, उनके अनुसार ज्ञान कभी उत्पन्न नही किया जा सकता, उसका केवल आविष्कार किया जा सकता है और ज्ञान के आविष्कारक व्यक्ति को प्रेरित पुरूष कहते है। चाणक्य का यह आत्मप्रज्ञा या आध्यात्मिक ज्ञान सात्विक ज्ञान है।

➢ आचार्य चाणक्य के प्रमुख शैक्षिक विचार :–

➢ शिक्षा का अर्थ :–

आचार्य चाणक्य के अनुसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक विकास में योग देती है, मनुष्य की वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है, वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में योग देती है, उसे जीवन और नागरिकता के कर्त्तव्यों को पूर्ण करने के लिए तैयार करती है और उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो राष्ट्र, समाज तथा संपूर्ण विश्व के लिए हितकर हो। आचार्य चाणक्य ने शिक्षा को सर्वोच्च स्थान प्रदान करते हुए शिक्षा का संकुचित अर्थ न लेकर व्यापक और व्यावहारिक अर्थ प्रस्तुत किया है।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 321-327 www.ijhssm.org

आचार्य चाणक्य ने समस्त प्रकार के ज्ञान को चार विभागों में वर्णित किया हैं– **आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति।** आन्वीक्षिकी के अन्तर्गत वे दार्शनिक विषय थे जो कि सूक्ष्म चिंतन तथा अन्तर्मुखी साधना से प्राप्त हुये थे। सांख्य, योग और लोकायत ऐसे ही विषय थे। त्रयी के अन्तर्गत साम, ऋक तथा यजु ये तीन वेद थे तथा अथर्ववेद तथा इतिहास भी वेद कहे गये है इसलिए उनकी शिक्षा भी इसमें शामिल थी और छः वेदांग भी सम्मिलित थे। वार्ता से तात्पर्य है कृषि, पशुपालन तथा वाणिज्य–व्यवसाय का ज्ञान तथा दण्डनीति शासन प्रबंध के लिए प्रयुक्त हुई हैं। आचार्य चाणक्य ने शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए चाणक्य नीति में कहा है कि –

कामधेनूगुणा विद्याह्यकाले फलदायिनी।
प्रवासे भातृसदृशा विद्या गुप्तं
धनं स्मृतम्।। (चाणक्य नीति, अध्याय–4, श्लोक–5)

विद्या कामधेनू के समान सभी इच्छाओं को पुर्ण करने वाली हैं। बुरे से बुरे समय में भी यह साथ नही छोडती। घर से कही बाहर चले जाने पर भी यह माँ के समान रक्षा करती है। विद्या गुप्त धन हैं, जिसे कोई चुरा नही सकता।

- **विद्या धनमधनानाम्।। (चाणक्य सूत्र श्लोक 295)**
  अर्थात विद्या निर्धनों का धन हैं।
- **भूषणानां भूषणं सविनया विद्या।। (चाणक्य सूत्र श्लोक – 368)**
  विनय सहित विद्या सब भूषणों में श्रेष्ठ भूषण हैं। अर्थात मनुष्य को विनीत, नम्र, सुजन, सुव्यवहारी बना देने वाली विद्या संसार के समस्त भूषणों से श्रेष्ठ भूषण हैं।
- **विद्या चोरैरपि न ग्राह्या। (चाणक्य सूत्र श्लोक – 296)**
  विद्या लोगो का गुप्त धन होने से चुराई भी नही जा सकती। इस प्रकार स्पष्ट है कि आचार्य चाणक्य ने शिक्षा का व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए शिक्षा को मानव जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी रूप में स्वीकार किया है। बिना शिक्षा के मनुष्य का सर्वांगीण विकास संभव नही है।

➢ **प्रारंभिक शिक्षा :–**

आचार्य चाणक्य के अर्थशास्त्र ग्रंथ के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा **'चूडाकरण संस्कार'** के पश्चात् ही आरंभ होती थी। प्रारंभिक शिक्षा के प्रारंभ में लिपि (लिखना) तथा संख्या (अंक गणित) का ज्ञान बालकों को कराया जाता था। किन्तु वास्तविक शिक्षा का प्रारंभ **''उपनयन संस्कार''** के बाद ही किया जाता था।

वृत्तचौलकर्मा लिपिं संख्यानं चोपयुंजीत। (अर्थशास्त्र–प्रथम अधिकरण, प्रकरण–2, अध्याय–4, श्लोक–4)

आचार्य चाणक्य बालक की शिक्षा के प्रारंभ पर प्रकाश डालते हुए कहते है कि मुण्डन–संस्कार या चुडाकरण संस्कार के बाद बालक को वर्णमाला और अंकमाला का अभ्यास कराया जाएं। तथा आगे की शिक्षा या वास्तविक शिक्षा उपनयन संस्कार के बाद ही प्रारंभ की जायें।

➢ **क्षत्रिय राजकुमारों की शिक्षा :–**

आचार्य चाणक्य के 'अर्थशास्त्र' ग्रंथ में क्षत्रिय राजकुमारों की शिक्षा के विषय में विशद् वर्णन मिलता है। अर्थशास्त्र में राजकुमारों की शिक्षा के लिए चार विज्ञानों का उल्लेख है–**आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति।** इनके अतिरिक्त राजकुमारों को विशेष विद्याओं की शिक्षा के लिए विशेष समय भी नियत किया गया था, क्षत्रिय राजकुमारों की सैनिक शिक्षा एवं युद्धकला की शिक्षा का कोटिल्य कृत अर्थशास्त्र में स्पष्ट रूप से उल्लेख मिलता है कि –

पूर्वमहर्भगं हस्त्यश्वरथ प्रहरणविद्यासु विनयं गच्छेत्।
पश्चिममितिहासश्रवणे, पुराणमितिवृत्तमाख्यायिकोदाहरणं
धर्मशास्त्रं चेतीतिहासः।
शेषमहोरात्रभागमपूर्वग्रहणं गृहीतपरिचयं च कुर्यात्।

अग्रहीतानामाभीक्ष्ण्य श्रवणं च। (अर्थशास्त्र–प्रथम अधिकरण, प्रकरण–2, अध्याय–4, श्लोक–2)

अर्थात दिन का पहला भाग हाथी, घोडा, रथ, अस्त्र–शस्त्र आदि विद्याओं की शिक्षा में बितायें। दिन के दूसरे भाग को इतिहास सुनने में लगाये। पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका, उदाहरण (मीमांसा), धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र ये सभी विषय इतिहास हैं। दिन और रात के बाकी बचे समय में नये ज्ञान का अर्जन और अधीत ज्ञान

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 321-327 www.ijhssm.org

का चिंतन–मनन करें। जो विषय एक बार सुनने में बुद्धिस्थ न हो सके, उसको बार–बार सुनें।

➢ **स्त्री शिक्षा :–**

आचाय चाणक्य ने स्त्री–पुरूष में कोई भेद न रखते हुए स्त्री शिक्षा का समर्थन करते हुए बालकों की भाँति बालिकाओं के उपनयन संस्कार को स्वीकार किया है और उन्हें शिक्षा प्राप्त करने की अधिकारिणी माना है इतना ही नही आचार्य चाणक्य ने स्त्रियों को सैनिक शिक्षा दिये जाने का उल्लेख करते हुए कहा है कि– **''शयनादुत्थितः स्त्रीगणैर्धन्विभिः परिगृह्येत।'' (अर्थशास्त्र, प्रकरण–16, अध्याय–20, श्लोक–1)** अर्थात प्रातः काल शैय्या से उठने पर राजा का स्वागत धनुर्धारिणी स्त्रियों के द्वारा होना चाहिए। इस प्रकार आचार्य चाणक्य ने स्त्रियों के लिए भी सैन्य शिक्षा का उल्लेख किया है।

➢ **शिक्षा के उद्देश्य :–**

आचार्य चाणक्य के अनुसार शिक्षा सभी के लिए हो और जन–जन का सर्वांगीण विकास हो ताकि अंतिम लक्ष्य अर्थात परम सत्य की प्राप्ति हो सके। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किये जायें, जो भारत राष्ट्रीय एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनायें रखने में सहायक हो तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं को पूरा कर सकने में सक्षम हो। इसके लिए हमारें समक्ष सरल व स्पष्ट उद्देश्य होने चाहिए, तथा उन उद्देश्यों का ज्ञान जन–जन को कराया जायें, तद्नरूप शिक्षा की व्यवस्था की जायें। आचार्य चाणक्य के अनुसार – ''अशिक्षा हमारे राष्ट्र की सबसे बडी कमी है, और इसे दूर करना होगा। जनसाधारण को शिक्षित करों और उपर उठाओं केवल तभी यह देश यथार्थ में राष्ट्ररूप में खडा हो सकेगा।'' इसके अतिरिक्त आचार्य चाणक्य बालक का चारित्रिक विकास, नैतिकता का विकास और राष्ट्र के लिए सुयोग्य नागरिको का निर्माण करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य स्वीकार करते है।

➢ **पाठ्यक्रम :–**

आचार्य चाणक्य अध्यात्मवादी तथा राष्ट्रवादी पहले है, और एक शिक्षाशास्त्री बाद में अतः उनके पाठ्यक्रम संबंधी विचारों में आध्यात्मिकता की झलक मिलना स्वाभाविक है। फिर भी उन्होनें पाठ्यक्रम में लौकिक जीवन से संबंधित विषयों की उपेक्षा नही की है। आचार्य चाणक्य ने लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के उद्देश्यों को सामने रखकर पढायें जाने वाले विषयों की रूपरेखा प्रस्तुत की है। आचार्य चाणक्य के अनुसार आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति ये चार विद्याएँ है। जिन्हें विद्यार्थी को पढना चाहिए –

1. **आन्वीक्षकी –** दार्शनिक चिंतन की विद्या।
2. **त्रयी –** तीन वेद– ऋक, यजु व साम।
3. **वार्ता –** कृषि, पशुपालन, व्यापार व वाणिज्य। तथा
4. **दण्डनीति –** राजनीति विद्या, दण्ड और सुशासन की विद्या। इसके अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा के पाठ्यविषय को स्पष्ट करते हुए आचार्य चाणक्य अर्थशास्त्र ग्रंथ में लिखा है कि –

सामर्ग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी। अथर्ववेदेतिहासवेदौ च वेदाः।
शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरूक्तं छंदोविचितिर्ज्योतिषमिति चांगानि।

(अर्थशास्त्र, प्रकरण–1, अध्याय–2, श्लोक–1)

आचार्य चाणक्य कहते है कि साम, ऋक तथा यजु इन तीन वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है अर्थात वेद त्रयी में तीनों वेदों की शिक्षा सम्मिलित है। अथर्ववेद और इतिहास वेद भी वेद कहे जाते है, इस प्रकार आचार्य चाणक्य धार्मिक शिक्षा में वेद त्रयी के साथ–साथ चौथे वेद अथर्ववेद और इतिहास विषय की शिक्षा भी सम्मिलित कर देते है तथा इनके साथ शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद और ज्योतिष इन छः वेदांगो की शिक्षा का भी समावेश करते है इस प्रकार स्पष्ट हो

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 321-327 www.ijhssm.org

जाता है कि आचार्य चाणक्य ने धार्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में विशेष स्थान प्रदान किया है। लौकिक विषयों के रूप में आचार्य चाणक्य ने वर्णानुसार आद्यौगिक शिक्षा, आयुर्वेद, राजनीति या दण्डनीति, सैनिक शिक्षा के साथ–साथ ललित व हस्तकलाओं की शिक्षा को पाठ्यक्रम में विशेष स्थान प्रदान किया है।

➢ **शिक्षण विधि :–**

आचार्य चाणक्य ने वैदिक शिक्षा प्रणाली की भाँति शिक्षण विधियों में श्रवण, मनन और निधिध्यासन को प्रमुख स्थान दिया है। इनके अतिरिक्त आचार्य चाणक्य ने व्याख्या प्रणाली, वाद–विवाद, व्यक्तिगत निर्देशन, क्रियात्मक एवं व्यावहारिक विधि के साथ–साथ अभ्यास और स्वाध्याय विधि पर विशेष बल दिया है। आचार्य चाणक्य ने अभ्यास विधि पर सर्वाधिक बल देते हुए चाणक्य नीति में कहा है कि –

अनभ्यासे विषं शास्त्रमजीर्णे भोजनं विषम।
दरिद्रस्य विषं गोष्ठी वृद्धस्य तरूणी विषम्।। (चाणक्य नीति, अध्याय–4, श्लोक–15)

आचार्य चाणक्य अपने ज्ञान को चिरस्थायी व उपयोगी बनाए रखने के लिए अभ्यास पर बल देते हुए कहते है कि जिस प्रकार अच्छे से अच्छा भोजन बदहजमीं में लाभ करने के स्थान पर हानि पहुँचाता है और विष का काम करता है, उसी प्रकार निरंतर अभ्यास न करने से शास्त्र ज्ञान भी मनुष्य के लिए घातक विष के समान हो जाता है। जो व्यक्ति निर्धन व दरिद्र है, उसके लिए किसी भी प्रकार की सभाएँ व उत्सव विष के समान है। इस प्रकार उक्त श्लोक में आचार्य चाणक्य ने विद्या की उपयोगिता के लिए अभ्यास को अति आवश्यक माना है। इसी प्रकार स्वाध्याय के बारे में आचार्य चाणक्य कहते है कि –

पुस्तकेषु च या विद्या परहस्तेषु च यद्वनम।
उत्पन्नेषु च कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम्।। (चाणक्य नीति, अध्याय–16, श्लोक–20)

आचार्य चाणक्य कहते है कि जो विद्या पुस्तक में ही है, और जो धन दूसरे के हाथ में चला गया है, ये दोनों चीजे समय पर काम नही आती। आशय यह है कि अपनी विद्या को स्वाध्याय व अभ्यास से व्यवहार में लाते रहे, वही विद्या तथा अपने हाथ का धन ही समय पर काम आते है। उधार दिया हुआ धन और पुस्तकों में लिखी विद्या एकाएक काम पड जाने पर साथ नही देते। इस प्रकार आचार्य चाणक्य विद्या की उपयोगिता बनायें रखने एवं विद्या के सदुपयोग के लिए स्वाध्याय पद्धति पर सर्वाधिक बल देते है।

➢ **गुरू शिष्य संबंध :–**

आचार्य चाणक्य ने अपने चाणक्य नीति और चाणक्य सूत्र ग्रंथो में गुरू–शिष्य संबंधो तथा गुरू व छात्रों के धर्म व कर्तव्य पर व्यापक रूप से अपने विचार व्यक्त किये है। आचार्य चाणक्य समाज की उन्नति तथा शिक्षा के उचित वातावरण के लिए समाज, छात्रों और शिक्षकों में परस्पर समझ, प्रेम, सम्मान और सोहार्द्र को आवश्यक मानते है। गुरू ही ज्ञानपिपासु की आँखे खोलने वाले होते है, गुरू के प्रति श्रद्धा, नम्रता, विनय और आदर के बिना हमें ज्ञान प्राप्ति हो ही नही आचार्य चाणक्य के अनुसार गुरू–शिष्य के मध्य पिता–पुत्र जैसे संबंध होने चाहिए, गुरू–शिष्य में इसी प्रकार की अन्योन्याश्रितता, अंतर्निहितता व संपूरकता की भावना का होना अपरिहार्य है। गुरू, शिष्य को अपनी मूल्यांकन पूँजी समझे और शिष्य भी गुरू को पर ब्रह्म समझकर ज्ञानार्जन करे, तभी उसमें ज्ञान प्राप्त करने की ग्राह्यता व क्षमता उत्पन्न हो सकेगी।

➢ आचार्य चाणक्य के शैक्षिक विचारों की सम–सामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रांसगिकता :–

आचार्य चाणक्य की शिक्षा नीति की सम–सामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को अग्रांकित बिंदुओं के आधार पर समझा जा सकता है–

- आचार्य चाणक्य ने राष्ट्रीय एकता व अखंडता की स्थापना के लिए अपने शिष्यों के साथ मिलकर जो जन–जागरूकता का कार्य किया वह आज भी प्रासंगिक है, तथा वर्तमान भारत को ऐसे कार्यो की आवश्यकता है।

- आचार्य चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र ग्रंथ में राष्ट्रीय सुरक्षा हेतु जिस विदेश नीति, गुप्तचर व्यवस्था और

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 321-327 www.ijhssm.org

शासन व्यवस्था का उल्लेख किया है, वह आज भी प्रासंगिक

- आचार्य चाणक्य ने अपनी शिक्षा के द्वारा राष्ट्र के युवाओं को राजनीतिक शिक्षा और सैन्य प्रशिक्षण प्रदान कर राष्ट्रभक्त बनाने का पावन कार्य किया जो आज भी प्रासंगिक है।

- आचार्य चाणक्य ने भारतीय सनातन संस्कृति के मूल तत्वों और वैदिक ज्ञान के द्वारा अपने शिष्यों को मानववादी व संस्कारी बनने की शिक्षा दी। भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्यों को अक्षुण्ण बनायें रखने के लिए आज भी ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है।

- आचार्य चाणक्य के अनुसार शिक्षा के द्वारा बालकों में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था उत्पन्न कर उनका भारतीयकरण करना आवश्यक है। यह विचार आज भी उतना ही प्रासंगिक है, क्यों कि वर्तमान भारत का युवा अपने सांस्कृतिक गौरव को भूलाकर पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंग चुका है।

- आचार्य चाणक्य ने लौकिक विषयों के साथ–साथ आध्यात्मिक विषयों की शिक्षा पर भी बल दिया, जिसकी वर्तमान समय में भी आवश्यकता है, क्यों कि वर्तमान भारतीय समाज की पीढी में आध्यात्मिक संस्कारों का लोप हो चुका है।

- आचार्य चाणक्य ने शिक्षण के साथ–साथ सैन्य प्रशिक्षण, हस्तशिल्प और औद्योगिक शिक्षण–प्रशिक्षण का समर्थन किया है, जो बालक को रोजगारोन्मुखी बनाकर जीविका चलाने योग्य बनाती है। आचार्य चाणक्य की यह शिक्षा आज भी प्रासंगिक है, क्यों कि आज भारत के समक्ष बेरोजगारी सबसे बडा संकट बन गया है।

- आचार्य चाणक्य ने जन शिक्षा का समर्थन किया है ताकि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्रीय प्रगति में अपना योगदान दे सके। वर्तमान समय में भी सरकार द्वारा सभी के लिए शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत् है।

- आचार्य चाणक्य के अनुसार शिक्षक को सद्चरित्र, कर्त्तव्यनिष्ठ और अपने विषय का ज्ञाता होना चाहिए क्यों कि शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है, यह तथ्य आज भी प्रासंगिक है, क्यों कि आज शिक्षकों के सम्मान में गिरावट आ गयी है।

- **निष्कर्ष :–**

आचार्य चाणक्य निःसंदेह एक महान शिक्षक और राष्ट्र निर्माता थे, उनके शिक्षा संबंधी विचार और नीतियाँ आज भी शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उनके द्वारा बतायी गयी शिक्षा नीति का अनुपालन कर कोई भी राष्ट्र आत्मनिर्भर और शक्तिशाली बनकर स्वयं को वैश्विक स्तर पर एक सुदृढ राष्ट्र के रूप में स्थापित कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भटनागर, सुरेश, सक्सैना, अनामिका – ''आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ'' प्रकाशक – विनय रखेजा आर. लाल बुक डिपो निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ।
2. डॉ. वशिष्ठ, आशिष – ''संपूर्ण चाणक्य नीति'' प्रकाशक – के. के. पब्लिकेशन्स भरतराम रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
3. शर्मा, महेश दत्त – ''क्लासरूम में चाणक्य'' प्रकाशक – प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. पं. त्रिपाठी, रमाशंकर – ''मनीषी चाणक्य'' प्रकाशक – पाठक एण्ड कंपनी बी. वाराणसी धोप स्ट्रीट, कलकता।
5. रावत, विनोद – ''चाणक्य जीवन परिचय'' प्रकाशक – तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स।
6. प्रो. पाठक, रमेश प्रसाद – ''आचार्य चाणक्य का शैक्षिक चिंतन'' प्रकाशक – कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
7. दीपकंर, आचार्य, ''कौटिल्य कालीन भारत'', प्रकाशक – हिंदी साहित्य समिति, सूचना विभाग, लखनऊ, उतरप्रदेश।
8. गैरोला, वाचस्पति, ''कौटिल्य का अर्थशास्त्र और चाणक्य सूत्र'', प्रकाशक – चौखंबा विद्याभवन चौक, बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे पो. बो. 68, वाराणसी।
9. विद्याभास्कर, श्री रामावतार, ''चाणक्य सूत्राणी'', प्रकाशक – बसंत श्रीपाद सातवलेकर, बा. ए. भारत मुद्रणालय, स्वाध्याय मंडल, पारडी, सूरत, गुजरात।
10. डॉ. अग्रवाल, उषा, ''चाणक्य नीति'', राष्ट्र सृष्टा एवं भविष्य दृष्टा, प्रकाशक – सुल्तान चंद एंड संस, दरियागंज, नई दिल्ली।
11. पाराशर, अश्विनी, ''चाणक्य नीति'', प्रकाशक – डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा. लि. ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, X 30, फेस – 2 नई दिल्ली।

12. पं. श्रीमाली, राधाकृष्ण, ''चाणक्य नीति'', प्रकाशक – अनुराग प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली।
13. प्रो. प्रसुन, श्रीकांत, ''चाणक्य नीति एवं कौटिल्य अर्थशास्त्र'', प्रकाशक – वी एण्ड पब्लिशर्स, एफ 2/16 अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली।
14. प्रेमचंद, महेश, ''आचार्य चाणक्य और चंद्रगुप्त'', प्रकाशक– प्रगति संस्थान एच. फ्रेंडस अपार्टमेंटस – 601, दिल्ली।
15. विद्यालंकार, सत्यकेतु, ''मौर्य साम्राज्य का इतिहास'', प्रकाशक – इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, उ. प्र.।